इकाई 12 सामाजीकरण*

संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 सामाजीकरणः अर्थ व परिभाषाएं

- 12.2.1 सामाजीकरण क्या है?
- 12.2.2 सामाजीकरणः कुछ परिभाषाएं

12.3 सामाजीकरण के प्रकार

- 12.3.1 प्रथम सामाजीकरण
- 12.3.2 द्वितीय सामाजीकरण
- 12.3.3 लैंगिक सामाजीकरण
- 12.3.4 अग्रिम सामाजीकरण
- 12.3.5 पुनर्सामाजीकरण
- 12.3.6 वयस्क सामाजीकरण

12.4 सामाजीकरण के सिद्धांत

- 12.4.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड एवं स्वविकास का सिद्धांत
- 12.4.2 चार्ल्स हॉर्टन कूले एवं आत्म दर्पण दर्शन सिद्धांत
- 12.4.3 सिग्मंड फ्रायड एवं मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

12.5 सामाजीकरण के माध्यम

- 12.5.1 परिवार
- 12.5.2 सखा समूह
- 12.5.3 विद्यालय
- 12.5.4 संचार मीडिया

12.6 सारांश

12.7 सन्दर्भ

12.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जानेंगेः

- सामाजीकरण की परिभाषा;
- किसी एक/कुछ प्रमुख विचारकों के नाम जो सामाजीकरण के अध्ययन में सहयोगी रहे;
- विभिन्न प्रकार के सामाजीकरण के प्रकार; तथा
- सामाजीकरण के माध्यम एवं वे किस तरह हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

12.1 प्रस्तावना

हम इस विषय की शुरुआत सामाजीकरण के अर्थ और परिभाषा के साथ करेंगे। तदुपरांत हम सामाजीकरण के प्रकार एवं सिद्धांतों पर चर्चा को आगे लेकर जायेंगे। अंत में हम

*बियंका डाव, शोधार्थी, जे.एन.यू

सामाजीकरण के विभिन्न माध्यमों का परीक्षण करके चर्चा समाप्त करेंगे। इस प्रकार इस इकाई में हम सामाजीकरण का गहन अध्ययन करेंगे।

12.2 सामाजीकरण – अर्थ एवं परिभाषा

12.2.1 सामाजीकरण क्या है?

सामाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के विभिन्न सरोकारों को समझने तथा सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विभिन्न समाजों में बच्चों को सामाजिक मूल्यों से अवगत कराने की अलग-अलग तरीके व परंपराये हैं। बच्चों के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए उनका सामाजीकरण अनिवार्य है। सामाजीकरण के अंतर्गत बच्चों को परिवारों परिजनों तथा संबंधित वर्गों के नियमों आदतों, तथा मूल्यों की जानकारी दी जाती है। बच्चा सामाजीकरण के माध्यम से उस समाज की मान्यताओं रीति-रिवाजों तथा संस्कृति की जानकारी प्राप्त करता है। सामाजीकरण समाज की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का काम करता है। यह प्रक्रिया बच्चों को अनेक प्रकार के दायित्यों से अवगत कराती है तथा उनका निर्वाह करने में उनकी मदद करती है। इस प्रकार सामाजीकरण एक पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी से जोड़ने का काम करता है।

12.2.2 सामाजीकरणः परिभाषाएं

- एंथोनी गिडॉन्स : "सामाजीकरण उस पद्धति से मनुष्य का परिचय कराता है जो उसमें सामाजिक संस्कृति को ढालती है।" (2014:263-64).

  सामाजीकरण का ''उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिससे असाहय मानव शिशु धीरे–धीरे एक आन्म जागरूक जानकार व्यक्ति बन जाता है, जो कि अपनी समाजिक संस्कृति के तौर तरीके में निपुण है।

- पीटल वर्सले के अनुसार "सामाजीकरण वह पद्धति है जिसके द्वारा मनुष्य को सामाजिक समूहों के रीति-रिवाजों व नियमों का प्रशिक्षण दिया जाता है। सामाजीकरण मानव समाज की गतिविधियों तथा संस्कृतियों का वाहक है।"(1972:153).

- "फ्री टोनी मिल्टन के अनुसार " वह प्रक्रिया जिससे हम उस समाज की संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करते हैं जिसमें हम पैदा हुए हैं, वह प्रविधि जिसके द्वारा हम अपने समाज की विशेषताओं को सीखते हैं तथा सोचने व व्यवहार करने के तरीकों की जानकारी प्राप्त करते हैं, सामाजीकरण कहलाती है।"(1981:10).

12.3 सामाजीकरण के प्रकार

विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों में सामाजीकरण की प्रक्रिया अलग-अलग होती है जिसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

12.3.1 प्राथमिक सामाजीकरण

यह मनुष्य के सामाजीकरण का पहला चरण है जिसका जीवन में विशेष महत्व है। जन्म से लेकर बचपन तक की सामाजीकरण प्रक्रिया प्राथमिक सामाजीकरण कहलाती है। इस अवधि में बच्चों को भाषा-ज्ञान तथा व्यवहार सिखाया जाता है। सामाजीकरण का यह चरण परिवार में ही संपन्न होता है। इस अवधि में अबोध बालक अपने परिवार तथा परिवेश से भाषा की जानकारी प्राप्त करता है तथा आरंभिक व्यवहार सीखता है। इस अवधि में ही आगे

के जीवन में सीखने की प्रक्रिया की नींव पड़ती है। प्राथमिक सामाजीकरण समाज की मूल संस्कृति तथा उसके विचारों से बच्चों को अवगत कराता है। इस अवधि में बच्चों के अंतर्मन में मूल्यों तथा विचारों का ढांचा तैयार होता है जब उन्हें दुनिया की तथा उसके विभिन्न सरोकारों की कोई जानकारी नहीं होती। इस स्तर पर परिवार बच्चों के सामाजीकरण का दायित्व निभाता है।

12.3.2 द्वितीय चरण का सामाजीकरण

जब बच्चा बचपन की दहलीज लाँघकर किशोरावस्था में प्रवेश करता है तब उसके सामाजीकरण का दूसरा चरण आरंभ होता है। इस चरण के दौरान सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार के साथ-साथ विद्यालय तथा मित्र समूहों का योगदान भी आरंभ हो जाता है। विभिन्न माध्यमों द्वारा विभिन्न प्रकार के सामाजिक संपर्क होते हैं जो बच्चों को नैतिक मानदंडों, रीति-रिवाजों तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सिद्धांतों की जानकारी देने में सहयोग करते हैं। जब बच्चा संस्थागत व्यवस्थाओं जैसे विद्यालय आदि में शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त करता है तो उसके सामाजीकरण का दूसरा चरण संपन्न होता है। दूसरे चरण का सामाजीकरण प्रथम चरण के सामाजीकरण के साथ-साथ चलता रहता है। परंतु पारिवारिक व्यवस्थाओं से हटकर बच्चे जब विद्यालयों में शिक्षण पाते हैं तब उनमें दायित्व-बोध आने लगता है। दूसरे चरण के सामाजीकरण में संस्थाओं तथा विशिष्ट दायित्वों से जुड़े व्यक्तियों का योगदान अधिक रहता है। इस दौरान बच्चा ज्ञान अर्जित करता है तथा सतर्कता पूर्वक सीखता है और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की स्थिति में प्रवेश करने लगता है जबकि प्राथमिक चरण में वह सांस्कृतिक गतिविधियों का ज्ञान आत्मसात करता है।

12.3.3 लैंगिक सामाजीकरण

इस चरण तक आते-आते बच्चों में विचार प्रक्रिया आकार ग्रहण कर चुकी होती है। इसी प्रक्रिया के आधार पर वह लैंगिक भूमिकाओं की जानकारी प्राप्त करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार लैंगिक चेतना आने पर मनुष्य में स्त्री या पुरुष की विशेषताएं निर्मित होने लगती हैं। स्त्री और पुरुष के बीच किस तरह के संबंध होते हैं तथा वे एक दूसरे के साथ किस प्रकार व्यवहार करते हैं यह चेतना इसी अवधि में आती है। लैंगिक चेतना स्त्री व पुरुष के रूप में सामाजिक दायित्व का बोध कराती हैं।

बच्चों को समझाने तथा उनका मार्गदर्शन करने के बड़ों के तरीके भिन्न-भिन्न होते हैं। कपड़े पहनने का ढंग, हेयर स्टाइल, साज-सज्जा के भिन्न-भिन्न साधन जो स्त्री पुरुष इस्तेमाल करते हैं। उन्हें देख देख कर बच्चे स्त्री व पुरुषों के अलग-अलग तरीकों को समझ लेते हैं। दो वर्ष का होते होते बच्चे को यह समझ आ जाता है कि उसका लिंग क्या है? जहाँ लड़कियां गुड़ियों से खेलना पसन्द करती हैं वहीं लड़कों के खिलौने कार तथा बंदूक आदि पसंद होते हैं। यद्यपि अब समाज में स्त्रीलिंग व पुर्लिंग के अलावा तीसरे लिंग या नपुंसक लिंग का भी उल्लेख होने लगा है। जिनकी पहचान स्त्रीलिंग या पुल्लिग के रूप में नहीं की जा सकती वे तृतीय लिंग की श्रेणी में आते है। भारत पाकिस्तान तथा बांग्लादेश में इन्हे हिजड़ा कहा जाता है। इन्हे विशिष्ट लिंगी भी कहा जाता है।(टोबले व मॉर्गन 2002)

12.3.4 अग्रिम सामाजीकरण

अग्रिम सामाजीकरण की अवधारणा प्रसिद्ध समाजशास्त्री रॉबर्ट के मेर्टन (1957) ने की थी। इस सामाजिक प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति को भावी भूमिका अथवा कार्य के लिए पहले से ही तैयार

किया जाता है। इस सामाजिक प्रक्रिया के दौरान लोगों को उन कार्यों से जुड़े लोगों के संपर्क में लाया जाता है जो कार्य वे भविष्य में करना चाहते हैं। इससे उनका कार्य के लिए आसानी से चयन हो जाता है और वे सरलता से उसे संभाल लेते हैं। कुछ लोग यह मानते हैं कि माता-पिता या अभिभावक प्राथमिक सामाजीकरण की अवस्था में ही बच्चों को उनके भावी कार्यों के बारे में अग्रिम जानकारी दे देते हैं और सामाजिक भूमिका से भी अवगत करा देते हैं। कुछ माता-पिता बच्चों को भविष्य निर्माण के उद्देश्य से बोर्डिंग स्कूल में दाखिल करवा देते हैं जहां उन्हें भविष्य के लिए तैयार किया जाता है।

12.3.5 पुनर्सामाजीकरण

पुनर्सामाजीकरण मनुष्यों को पुराने व्यहवारों तथा भूमिकाओं को त्यागने तथा उनके स्थान पर नयी भूमिकाओं का निर्वाह करने में मदद करता है । जब किसी व्यक्ति को अपने जीवन में बड़े बदलाव की ज़रुरत महसूस होती है तब पुनर्सामाजीकरण की आवश्यकता पड़ती है। पुनर्सामाजीकरण उन व्यक्तियों के जीवन में लगातार चलता रहता है जिन्हे अतीत की भूमिकाओं तथा अनुभवों को छोड़ना पड़ता है तथा नए व्यवहार एवं मूल्य अपनाने पड़ते है। सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री गोफमैन पुनर्सामाजीकरण पागल खाने की संज्ञा देते हैं। जिस प्रकार पागलखाने में रहने वाले लोगो को वहां के नियमों का कठोरता से पालन करना पड़ता है उसी प्रकार संस्थाओं का यह आग्रह रहता है कि उन में काम करने वाले लोग उनके नियमों का अक्षरशः पालन करें भले ही वे उनके अनुकूल हो या ना हो। लड़की को विवाह के बाद ससुराल के नियमों व रीति-रिवाजों आदि का पालन करने के लिए तैयार किया जाना पुनः सामाजीकरणका सटीक उदाहरण है। इसका उद्देश्य होता है लड़की का नए परिवेश में रच बस जाना और उसी के अनुसार अपने आप को पूरी तरह बदल डालना।

12.3.6 वयस्क सामाजीकरण

जब कोई व्यक्ति वयस्क होने पर नई भूमिकाओं में अपने आप को ढालने के लिए प्रयास करता है तो उसे वयस्क सामाजीकरण की संज्ञा दी जाती है। पति, पत्नी या कर्मचारी का नए कार्यों व भूमिकाओं के अनुसार अपने आप को ढालना वयस्क सामाजीकरण के अंतर्गत आता है। आवश्यकता अनुसार व्यक्ति नए-नए व्यहवारो तथा विचारो को अपने जीवन में शामिल करते रहते हैं। यह प्रक्रिया जीवन के अंतिम क्षणों तक जारी रहती है। पारंपरिक समाजों में परिवार के महत्वपूर्ण मामलों में वृद्ध लोगों का पूरा दखल रहता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ स्त्री और पुरुष दोनों प्रकार के वयस्क इस प्रवृत्ति पर जोर देते रहते हैं।

परंतु आधुनिक युग में अनेक परिवारों में वृद्धों का प्रभाव घटा है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि आधुनिकता के दौर में वृद्ध परिवारों पर से अपनी पकड़ खो चुके हैं। आज भी कुछ महत्वपूर्ण मामलों में उनकी सलाह ली जाती है। जिस प्रकार वयस्क अपने बच्चों को कुछ न कुछ सिखाने में लगे रहते हैं वैसे ही वृद्ध जन भी अपने से कम आयु के लोगों से बहुत कुछ सीखते हैं। परिवार के बाहर भी वयस्क सामाजीकरण की प्रक्रिया जारी रहती है। कार्यस्थल, सामाजिक समूह, वरिष्ठ नागरिक संगठन, मनोरंजन क्लब तथा धार्मिक संगठन भी वयस्क सामाजीकरण में अपना योगदान देते हैं।

बोध प्रश्न

1) सामाजीकरण की महत्वपूर्ण विशेषताएं क्या क्या है?

.....

.....

2) सामाजीकरण की सार्थक परिभाषा बताओ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) जीवन के विभिन्न चरणों में चलती रहने वाली सामाजीकरण की प्रक्रियाओं का विवरण देते हुए सामाजीकरण के प्रकार पर टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.4 सामाजीकरण के सिद्धांत

लगभग सभी समाजविज्ञानी एवं मनोविज्ञान विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि बच्चे के विकास के केंद्र में मूल रूप से "स्वत्व" (self) विद्यमान रहता है और सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा यह विकास संभव हो पाता है। इस अवधारणा को भली-भांति समझने के लिए सामाजीकरण के प्रमुख सिद्धांतों का विवरण देना आवश्यक है।

12.4.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड एवं स्वविकास का सिद्धांत

अमेरिकन समाजशास्त्री जॉर्ज हर्बर्ट मीड के अनुसार बच्चे पूरी तरह सामाजिक प्राणी होते हैं और वे अपने चारों ओर हो रही गतिविधियों की नकल करते हुए बड़े होते हैं। बच्चे जिन लोगों के संपर्क में आते हैं उनसे कुछ न कुछ सीखते हैं। खेल एक ऐसा माध्यम है जिसके दौरान बच्चे बड़ो की नक़ल करना सीखते है। खेल में जिस तरह बड़े करते हैं वे भी उसी तरह करने लगते हैं। खेलने की उम्र तीसरे वर्ष के आस-पास आरम्भ हो जाती है। इस अवस्था में ही बच्चे बड़ों की विभिन्न भूमिकाओं की नकल करना और उन्हें अपने जीवन में उतारना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार बच्चे दूसरों से सीखते हैं।मीड इन दूसरों को विशिष्ट अन्य मानता है। बच्चों के खेल पहले सरल होते हैं और धीरे-धीरे कठिन होने लगते हैं। चार पांच साल का बच्चा बड़ों की भूमिकाएं अदा करने लगता है। उदाहरण के लिए बच्चे कक्षा में होने वाली गतिविधियों की नकल उतारना शुरू कर देते हैं। एक बच्चा अध्यापक बन जाता है तथा अन्य छात्र बन जाते हैं और वे कक्षा में हुई गतिविधियां दोहराते हैं। इस खेल को अधिकतर बच्चे टीचर-टीचर की सज्ञा देते हैं। इसी तरह के खेल का दूसरा प्रचलित उदाहरण डॉक्टर तथा रोगी की भूमिका वाला है जिसमें एक बच्चा डॉक्टर की भूमिका निभाता है दूसरा नर्स की और तीसरा बच्चा रोगी बन जाता है। फिर वे बिल्कुल वैसा ही दृश्य उपस्थित कर देते हैं जैसा कि रोगी जब डॉक्टर के पास इलाज के लिए जाता है तब बनता है। मीड इस तरह नकल उतारने की प्रक्रिया को बच्चों का दूसरों की भूमिकाओं में

उतर जाना मानता है। इस अवस्था में बच्चे परिपक्वता ग्रहण करने लगते हैं तथा अपने आप के बारे में व दूसरों के बारे में उनकी समझ विकसित होने लगती है। बच्चे अपने बारे में दूसरों के दृष्टिकोण और विचारों को ग्रहण करते हैं और अपने आप को 'मुझे' मानने लगते हैं।'मुझे'शब्द एक सामाजिक स्वत्व है जबकि 'मैं ' शब्द 'मुझे ' की प्रतिक्रिया है। सरल शब्दों में कहें तो 'मैं' दूसरों के कार्यों के प्रति बच्चे की प्रतिक्रिया है जबकि 'मुझे' दूसरों की उन सब प्रतिक्रियाओं का समुच्चय है जिसे बच्चा ग्रहण करता है।

स्वत्व के विकास का दूसरा चरण 8 या 9 वर्ष की अवस्था में आरंभ होता है। इस चरण में बच्चे समूह के सदस्यों के रूप में काम करना सीख जाते हैं और उनकी भूमिकाओं को सफलतापूर्वक निभाने लगते हैं।मीड सामान्य अन्य तथा विशिष्ट अन्य की अवधारणा प्रस्तुत करता है। किसी समूह विशेष की उस संस्कृति के नियमों व मूल्यों को सामान्य अन्य माना जा सकता है जिसमें बच्चा अपना जीवन जी रहा है। सामान्य अन्य के बारे मेंअपने समाज का विकास करते हुए बच्चा यह जान जाता है कि उस समाज अथवा समूह की स्वीकृति पाने के लिए उसे कौन से नियमों का पालन करना होगा तथा कैसा व्यवहार करना होगा। विशिष्ट अन्य में वह लोग आते हैं जो बच्चों के जीवन में विशेष महत्व रखते हैं और बच्चों की अपने बारे में समझ तथा भावनाओं व व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। मीड उन प्रमुख विचारकों में से है जो बच्चे के स्वत्व के विकास में विशिष्ट अन्य की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं।

12.4.2 कूले तथा उसका दारपणिक प्रतिबिम्ब का सिद्धांत

प्रसिद्ध अमेरिकी समाजवादी हॉर्टॉनकूली को उनके दारपणिक सिद्धांत के लिए जाना जाता है। बच्चे दूसरों के मतानुसार अपने आपके बारे में धारणा उत्पन्न कर लेते हैं। दूसरों के मतानुसार स्वयं को मानने लग जाना, दूसरों की दृष्टि में हम कैसे लगते हैं, इस कल्पना के अनुसार अपने आप को मानने लग जाना दारपणिक निजता प्रतिबिम्बात्मक निजता कहलाता है। अपने बारे में जो जानकारी दूसरों के विचारों को व उनके प्रतिक्रियाओं से प्राप्त होती हैं उसके आधार पर मनुष्य जो अपना एक बिंब निर्मित कर लेता है उसे दारपणिक निजता कहा जाता है। सबसे पहले अपने बारे में जानकारी बच्चा अपने माता पिता से प्राप्त करता है फिर दूसरों से प्राप्त जानकारी से उसकी पुष्टि करता है।जिस प्रकार अपने आप को जानने में दर्पण हमारी सहायता करता है, हमारे कपड़े कैसे लग रहे हैं, हमारा चेहरा कैसा लग रहा है, हम कैसे लग रहे हैं यह सब दर्पण में देखकर हम जान जाते हैं, उसी प्रकार हम अनुमान लगाने लगते हैं कि हमारा व्यवहार, हमारेतोर तरीके दूसरो को कैसे लग रहे होंगे। परिणामतः दूसरों की हमारे बारे में जो अवधारणा बनती है उसी के अनुसार हम अपने आप को मान लेते हैं और उसे से सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव भी ग्रहण करने लगते हैं। जैसे बच्चे को जब शरारत सूझती है तो वह सोचता है कि पकड़ा गया तो माता-पिता से झूठ बोल देगा, उसीसमय वह यह भी सोचता है कि यदि उसका झूठ पकड़ा गया तो वह माता पिता की नज़रो में गिर जायेगाद्यकूली के अनुसार अपनेबारे में धरना बनाने में प्रयोग प्रमुख रूप से तीन घटक काम करते हैं। पहला, दूसरों को हम कैसे लग रहे हैं, दूसरा, अन्य लोगों के विचार के बारे में हमारा अपना विचार और तीसरा, आत्म सम्मान की भावना, शर्म या दूसरों की हमारे बारे में अवधारणा से उपजा संदेह।

12.4.3 सिगमंड फ्रायड एवं मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

आत्म विश्लेषण की अवधारणा के जनक सुप्रसिद्ध ऑस्ट्रियाई स्नायु विज्ञानी सिगमंड फ्रायड के अनुसार सामाजीकरण चाहता है कि मनुष्य समाज के हितों की रक्षा के लिए निजी स्वार्थों का त्याग करें। उनके मत में सामाजीकरण वह प्रविधि है जो मनुष्य की चाहतों और

प्रवृत्तियों को इस प्रकार दिशा देती है कि उन्हें सांस्कृतिक रूप से सामाजिक मान्यता मिल जाए। फ्रूड के अनुसार व्यक्तित्व के तीन घटकों के माध्यमों से अथवा यह कहिए कि तीन स्तरों पर मनुष्य की सामाजीकरण की क्रिया संपन्न होती है – इद (Id), अहम् पराअहम तथा अहंकार (super ego)

स्वयंभू संवेग के अंतर्गत सभी प्रकार के मौलिक संवेग आते हैं। यह उस व्यक्तित्व का अचेतन, स्वार्थ परक, आवेगशील, प्रेरक तथा असंगत भाग है जो सदैव सुख की तलाश में लगा रहता है और दुखात्मक स्थितियों से बचता रहता है। यह संवेग मनुष्य को दूसरों की तथा समाज की परवाह किये बिना अपने स्वार्थो की पूर्ती के लिए उकसाता रहता है। जैसे कोई बच्चा किसी चीज की अतिरिक्त मांग करता है तो तब तक रोता रहता है जब तक वह उसे दे नहीं दी जाती।

अहंकार, स्वयंभू संवेग तथा पराअहम के बीच में मध्यस्थता का काम करता है। अहंकार हमारे संवेगो को नियंत्रित करने तथा उन्हें सामाजिक मान्यता के दायरों में रखने का काम भी करता है। उदाहरण के लिए जब हम बाजार में मिलने वाले छूट के लालच में आकर अधिक से अधिक खरीदारी करने के लिए लालायित हो जाते हैं तब वह हम पर दबाव बनाता है कि हम उतनी ही खरीदारी करें जितनी हमारी खरीदने की क्षमता है। स्वयंभू संवेग, अहंकार तथा पराअहम के बीच संतुलन बनाए रखने की प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। यह संतुलन सामाजीकरण का मुख्य माध्यम है।

पराअहम मनुष्य को सिद्धांतों, नियमों तथा नैतिक मान्यताओं से अवगत करवाता है जिन्हें मनुष्य सामाजीकरण के प्रत्याशी प्रक्रिया से सीखता है। परम अहंकार व्यक्ति का अंतर विवेक है। वह उसके अंदर की आवाज है जो आशाओं, विश्वासों और सामाजिक निर्देशों या सामाजिक मान्यताओं को व्यवस्थित करती है। उदाहरण के लिए, जैसे, यदि कोई बच्ची किसी की दुकान से चोरी छिपे कोई सामान उठाने की कोशिश करती है, जब उसे कोई देख नहीं रहा होता है, तब उसके मन में तुरंत एक आवाज उठती है कि चोरी करना गलत है। तब, यह जानते हुए भी कि वह पकड़ी नहीं जाएगी चीज नहीं चुरा पाती। मौलिक संवेग तथा पराअहम एक दूसरे के विरोधी होते हैं। क्योंकि ना तो यह संभव है कि हम अपनी सारी इच्छाओं को पूरा कर ले और ना ही यह संभव है कि हम कुछ पाने की इच्छा ही न करें।

बोध प्रश्न

1) मीड के अनुसार किसी बच्चे का सामाजिक व्यक्तित्व कैसे विकसित होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) कूले के अनुसार दारप्रणिक निजत्व अथवा प्रतिबिम्बात्मक निजत्व का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) व्यक्तित्व के विभिन्न घटक क्या क्या है? फ्रायड के अनुसार उनका सामाजीकरण से क्या संबंध?

.....

.....

.....

.....

.....

12.5 सामाजीकरण के माध्यम

सामाजीकरण की प्रक्रिया परिवार तक ही सीमित नहीं है। बड़ी संख्या में ऐसे समूह तथा संस्थान मौजूद है जिनसे लोग अपने समाज और समुदाय की संस्कृति सीखते हैं। परिवार सामाजीकरण की प्रथम पाठशाला है। सामाजीकरण के अन्य माध्यमों में प्रमुख रूप से सखा -मंडली, विद्यालय तथा मीडिया आते हैं। परिवार की भूमिका मनुष्य के जीवन में सबसे पहले आती है। सामाजीकरण के इस प्राथमिक चरण में माता-पिता, विशेष रूप से माता को सर्वाधिक श्रेय जाता है। इसके बाद शिक्षण संस्थान तथा मीडिया की भूमिकाएँ हैं।

12.5.1 परिवार

माता पिता एवं परिवार सामाजीकरण के सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। परिवार में सबसे पहले सामाजीकरण की प्रक्रिया माता आरंभ करती है। आधारभूत मूल्य जैसे प्यार, ममता, संवेदना, सहानुभूति, शिष्टाचार तथा लोकाचार आदि जीवन के आरंभिक चरण में परिवार में ही सिखाए जाते हैं। संयुक्त परिवारों में माता-पिता के साथ साथ चाचा चाची दादा-दादी आदि पारिवारिक सदस्य भी बच्चों के सामाजीकरण में अपना योगदान देते हैं। यदि परिवार में अनेक आँचलों व वर्गों से आए सदस्य भी मौजूद रहते हैं तब उनका बच्चों के सामाजीकरण पर विशेष प्रभाव पड़ता है। वे विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों के बीच बड़े होते हैं और उन्हें विभिन्न मूल्यो, शिष्टाचारों एवं आस्थाओं को अपने आप में समाहित करने का अवसर मिल जाता है। पारिवारिक समरसता और विषमता का भी बच्चे के विकास पर पूरा प्रभाव पड़ता है।

पीटरसन का मानना है कि बाल्यकाल में माता-पिता याअभिभावकों से बार-बार दूर किया जाना तथा घर बदलना भी बच्चों के मन पर दुष्प्रभाव डालते हैं। ऐसे में उन्हें नई परिस्थितियों व परिवेशों के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई आती है। ऐसे में बच्चे तथा किशोर तनावग्रस्त हो जाते हैं। यदि यह परिवर्तन परिवार में विखराव लाने वाले होते हैं

जैसे माता-पिता के बीच तलाक हो जाना अथवा उनका अलग-अलग रहना, बच्चों में विशेष रूप से तनाव पैदा करता है। निष्कर्ष यह है कि वे बच्चे या किशोर जिन्हें अपने परिवार से स्थाई तथा सहयोगात्मक तथा अनुकूलता से भरा वातावरण मिलता है वे उन बच्चों की तुलना में अच्छा विकास करते हैं जिन्हें पारिवारिक उथल-पुथल व अनिश्चय के वातावरण में जीना पड़ता है। भौतिक संसाधन, माता पिता का संरक्षण, पारिवारिक अनुकूलता तथा सहयोगात्मक वातावरण बच्चों के सामाजीकरण में विशेष भूमिका निभाते हैं।

12.5.2 साथी समूह

बचपन में साथियों का विशेष महत्व होता है। हम-उम्र संगी साथियों व मित्रों का सामाजीकरण में विशेष योगदान होता है। वे एक दूसरे को समझना, परस्पर सहयोग करना और समानता का व्यवहार करना साथ साथ सीखते हैं। आरंभ में साथियों के समूह पारिवारिक स्तर पर तथा घर के आसपास रहने वाले बच्चों को मिलाकर बनते हैं। जब बच्चे युवा होने लगते हैं तब वे अपने लिंग के बच्चों के साथ मित्रता करने लगते हैं और मित्र- मंडलिया बन जाती हैं। जो बच्चे मित्र मंडलियों में शामिल हो जाते हैं वे परिवार के सदस्यों की तुलना में मित्रों के साथ अधिक समय बिताते हैं। जब वे स्कूल जाने लगते हैं तो मित्रमंडल प्राय बिखर जाते है। चाहे पड़ोस में रहने वाले हो या विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले हो या फिर साथ साथ काम करने वाले, इनका प्रभाव आजीवन रहता है।

बुकोव्स्की का कहना है ,"जब वे आपस में मिल नहीं पाते तो सोशल मीडिया आदि के माध्यम से परस्पर संपर्क बनाए रखते हैं। बाल विद्यालय में पढ़ने के दौरान जब बच्चों को क्रेच या केयर सेंटर में रखा जाता है, उन दिनों साथियों से मिलने वाले अनुभव बच्चों के दैनिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालते हैं। इन दिनों बच्चे एक दूसरे से मिलकर रहने, चिढ़ाने, सूचनाओं के आदान-प्रदान, सहयोग, सुरक्षा, पुरस्कार, खुशियां तथा परेशान करने व नुकसान पहुंचाने जैसे मनोभावों से परिचित हो जाते हैं। बच्चे जब एक दूसरे के संपर्क में आते हैं तब एक दूसरे पर दबाव बनाने तथा धूम्रपान करने जैसी अनेक बुराइयां भी सीख जाते हैं।

12.5.3 विद्यालय

विद्यालय सामाजीकरण का प्रथम औपचारिक माध्यम है जो बच्चे के जीवन में विचारों तथा शिष्टाचारों का संचार करता है। बच्चे कक्षा में एक विशेष अनुशासन में रहना सीखते हैं। वे विद्यालय के नियमों व परंपराओं का पालन करते हैं तथा कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठों को आत्मसात करने के लिए परिश्रम करते हैं। वे अपने शिक्षकों का आदर करते हैं तथा उनका कहना मानते हैं। शिक्षकों की सकारात्मक व नकारात्मक भूमिकाओं का बच्चों के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अध्यापकों का काम बच्चों को केवल पढ़ना -लिखना सिखाना ही नहीं है, वे बच्चों में विचार करने की क्षमता भी उत्पन्न करते हैं। कुल मिलाकर विद्यालय बच्चे के सर्वांगीण विकास में सहयोग करते हैं और उन्हें समाज के सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराते हैं। इस स्तर पर बच्चों के सामाजीकरण में शिक्षकों की भूमिका उल्लेखनीय है।

फ्रोन्स का तर्क है कि अधिकतर बच्चों के लिए शिक्षक ही दूसरे सामाजीकरण के माध्यम होते हैं। सामाजीकरण के प्रथम चरण तथा द्वितीय चरण के बीच ऐसी स्थिति में कोई अंतिम रेखा नहीं खींची जा सकती। फ्रोन्स आगे कहता है कि यद्यपि विद्यालय और उनमें पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम तथा वहां होने वाली गतिविधियां सामाजीकरण के दूसरे चरण में ही आते हैं, जबकि आरंभिक अवस्था का संख्या ज्ञान तथा अक्षर ज्ञान प्राथमिक सामाजीकरण

में आता है। बड़े शिक्षण संस्थान बच्चों को अपने औपचारिक शिक्षण कार्यक्रमों के अलावा कुछ और भी सिखाते हैं जो बच्चों के विकास में विशेष रूप से सहयोगी होता है।

कुल मिलाकर विद्यालयों की भूमिका भी बच्चों के सामाजीकरण व उनके समुचित विकास में उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितनी कि परिवार की। हिंदी फिल्म "हिंदी मीडियम" में यह दिखाया गया है कि तथाकथित समाजों में बच्चों के उत्तम सामाजीकरण के लिए माता-पिता अच्छे विद्यालयों पर ज्यादाभरोसा करते हैं।

12.5.4 संचार मीडिया

संचार मीडिया में रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, पत्रिका, मीडिया पोर्टल तथा वेबसाइट आदि माध्यम आते हैं। फ्रूड का तर्क है कि इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के युग में बच्चों को सीखने के विभिन्न प्रकार के नए-नए अवसर प्राप्त हैं। इससे बच्चों के सीखने का दायरा बहुत बढ़ गया है। अब प्रथम व दूसरे चरणों के सामाजीकरणके लिए बच्चे परिवारों तथा सखा मंडली आदि पर निर्भर नहीं रह गए हैं। फ्रॅन्स का यह भी कहना है कि समकालीन सामाजिक सत्य व मिथक अब मीडिया के माध्यम से हम तक पहुंचाए जाने लगे हैं। आधुनिक दौर में सोशल मीडिया यह साबित कर चुका है कि सूचनाओं के माध्यम किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। उदहारण के लिए फेसबुक के माध्यम से पेश की जाने वाली सामग्री हमारी रुचियों, पहचानो, संपर्क बढ़ाने की चाहतों को ठोस आधार प्रदान कर रही है। सूचना व संपर्क के अन्य माध्यमों की तुलना में कुछ वर्षों से टेलीविजन बच्चों को विशेष रूप से अपने प्रभाव में लेने में सफल हुआ है। टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम जैसे सीरियल, फिल्में, कार्टून, समाचार, संगीत, फैशन, खाद्य सामग्री, विविध प्रकार की ऐतिहासिक और भौगोलिक जानकारियाँ सभी आयु वर्ग के लोगों को प्रभावित करती हैं। प्रोटेट के अनुसार, टेलीविजन द्वारा हिंसा से जुड़ी घटनाओं को बड़ा चढ़ाकर दिखाया जाना समाज में उग्रता का वातावरण पैदा कर रहा है। बच्चों को दिखाए जाने वाले कार्टून कार्यक्रम तथा सीरियल हिंसा की घटनाओं से भरे होते हैं। बच्चे टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली हिंसा को गंभीरता से नहीं लेते परंतु फिर भी इस बात की पूरी संभावना रहती है कि वे बच्चों में असुरक्षा की भावना बिठा सकते हैं। इसके अलावा कुछ गीत, फिल्में तथा हिंसा युक्त वीडियो गेम्स भी बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए नीड फॉर स्पीड, बर्न आउट, रोड रैश जैसे वीडियो गेम्स भले ही खेल में जीतने वालों को पुरस्कार देते हो लेकिन वे ताबड़तोड़ स्पीड से गाड़ी चलाने वालों की प्रवृत्ति को उकसाने का काम करते हैं। यद्यपि संवेदना उत्पन्न करने वाले सुपर मारियो सनशाइन जैसे गेम्स भी टेलीविजन पर दिखाई जाते हैं जो बच्चों में सहानुभूति तथा दूसरों की सहायता से करने जैसे संस्कार डाल सकते हैं। इस प्रकार समाज में मीडिया हमारे चारों ओर पसरे विश्व की समझ पैदा कराते हुए सामाजीकरण में विशेष भूमिका निभाता है।

बोध प्रश्न

1) प्राथमिक व द्वितीय चरणों के सामाजीकरण में परिवार एवं विद्यालय की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

2) साथी समूह के सामाजीकरण के दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) संचार मीडिया किस प्रकार सामाजिक सामाजीकरण की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सारांश

इस इकाई में हमने सामाजीकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया। सामाजीकरण का अर्थ तथा उसकी प्रकृति के साथ साथ कुछ परिभाषाओं का भी अध्ययन किया। सामाजीकरण के विभिन्न प्रकारों के अध्ययन के साथ साथ सामाजीकरण के कुछ सिद्धांतों का भी अध्ययन किया। इस इकाई में हमने यह भी जाना कि सामाजीकरण के विभिन्न माध्यम क्या क्या हैं और वे सामाजीकरण की प्रक्रिया में किस प्रकार अपना योगदान देते हैं।

12.7 सन्दर्भ

अब्राहम. एम. अफ,(2014) , कंटेम्परारी सोशियोलॉजी ,ऐन इंट्रोडक्शन टू कॉन्सेप्ट्स एंड थेओरिएस , दूसरा एडिशन : ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

बिल्टोन टी (1981), इंट्रोडक्टरी सोशियोलॉजी, लंदन : थी मैकमिलन प्रेस लिमिटेड.

बुकोव्स्की, डब्ल्यू .एम्. एट अल . (2015). 'सोशलाईजेशन एंड एक्सपेरिएंसेस विथ पीअर्स' इन ग्रसेक, जे .ई. एंड हेर्स्टिग्स, पी .डी. हैंडबुक ऑफ़ सोशलाईजेशनः थ्योरी एंड रिसर्च . -228.

कूले, सी.एच. (1922). 'दी सोशल सेल्फ --1'दी मीनिंग ऑफ़ आईइन ह्यूमन नेचर एंड दी सोशल आर्डर. न्यू यॉर्कः चार्ल्स स्क्रिब्नर संस. 168-210.

फ्रायड, एस. (1962). थ्री एसेज ऑन दी थ्योरी ऑफ़ सेक्सुअलिटी, ट्रांस. जेम्स स्ट्रैची. न्यू यॉर्कः बेसिक बुक्स.

फ्रोंस.आई.(2016). दी ऑटोनॉमस चाइल्ड, स्प्रिंगर ब्रीफइन वेल बीइंग एंड क्वालिटी ऑफ़ लाइफ रिसर्च डीओआई

फर्ग्यूसनएस. जे. (2002) मैपिंग द सोशल लैंडस्केपः रीडिंग्स इनसोशियोलॉजी बोस्टन मैकग्राहिल

गिड्डेन्स. ए. (2006). सोशियोलॉजी. कैंब्रिजः पॉलिटी प्रेस..

गिड्डेन्स, ए. एट अल. (2014). इंट्रोडक्शन टू सोशियोलॉजी, नाइन्थ एडिशन. न्यू यॉर्कः डब्लू .डब्लू. नॉर्टन एंड कंपनी ..

गिड्डेन्स, ए. एंड सुत्तों, पी.डब्ल्यू. (2014). एसेंशियल कॉन्सेप्ट्स इन सोशियोलॉजी. कैंब्रिजः पॉलिटी प्रेस

हरलामबोस, एम्. एंड हील्ड, आर.एम्. (2009). सोशियोलॉजीः थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स.

जॉनसन, एच.एम्. (1960). सोशियोलॉजीः ए सिस्टेमेटिक इंट्रोडक्शन. न्यू यॉर्कः हरकोर्ट, ब्रेस एंड वर्ल्ड.

कैनेडी, डी.बी. एंड केर्बर, ए. (1973).रीसोशलाइजेशनः एन अमेरिकन एक्सपेरिमेंट. न्यू यॉर्कः बेहविओरल पब्लिकेशंस.

लैम्ब, एम्. ई. (2012). मदर्स, फादर्स, फैमिलीज़, एंड सरकमस्टान्सेसः फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग चिलड्रन एडजस्टमेंट. एप्लाइड डेवलपमेंटल साइंस.16:98 पृ.111.

मीड, जी.एच. (1972). माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटीः फ्रॉम दी स्टैंड पॉइंट ऑफ़ ए सोशल बिहेवियरिस्ट. शिकागोः दी यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस.

मैक लुहान, एम्. (1964). अंडरस्टैंडिंग मीडियाः दी एक्सटेंशन्स ऑफ़ मैन. न्यू यॉर्कः मैक ग्राव हिल.

मर्टन,आर.के. (1957). सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर.न्यू यॉर्कः फ्री प्रेस.

मोर्टिमर, जे.टी एंड सिम्मोंस, आर.जी. (1978). 'एडल्ट सोशलाइजेशन' इन एनुअल रिव्यु ऑफ़ सोशियोलॉजी, 4:421-454.

पैटरसन, सी.जे. एट अल . (2015). 'सोशलाइजेशन इन दी कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ फैमिली डाइवर्सिटी' इन ग्रसेक, जे.ई. एंड हेस्टिंग्स, पी.डी. हैंडबुक ऑफ़ सोशलाइजेशनः थ्योरी एंड रिसर्च. Pp. 206.

प्रोट, एस. एट अल. 2015. 'मीडिया ऐज एजेंट्स ऑफ़ सोशलाईजेशन' इन ग्रसेक, जे.ई. एंड हेस्टिंग्स, पी.डी. हैंडबुक ऑफ़ सोशलाईजेशनः थ्योरी एंड रिसर्च. Pp. 276, 280, 286.

स्ट्रैची, जे. (1961). दी स्टै.डर्ड एडिशन ऑफ़ दी कम्पलीट साइकोलॉजिकल वर्क्स ऑफ़ सिग्मंड फ्रूड, वॉल्यूम XIX (1923-1925): 'दी ईगो एंड दी आई डी एंड अदर वर्क्स'. लंदनः दी होगार्थ प्रेस एंड दी इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइकोअनाल्यिसस. 1-308.

टोले, ई.बी. एंड मॉर्गन, एल.एम्. (2002). रोमांसिंग दी ट्रांसजेंडर नेटिवः रथिंकिंग दी यूज़ ऑफ़ दी "थर्ड जेंडर" कांसेप्ट. जीएलक्यूः ए जर्नल ऑफ़ लेस्बियन एंड गे स्टडीज 8(4), 469-497. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस.

वॉर्स्ली, पी. एट अल. (1972). इंट्रोडूसिंग सोशियोलॉजी इंग्लैंडः पेंगुइन बुक्स.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY